Notes

औपनिवेशिक शिक्षा और प्रयोगों की राष्ट्रवादी आन्दोलन (Nationalist Critique of Colonial Education and experiments)

परिचय :- अंग्रेजों ने अपना पहला कदम ईस्ट इंडिया कंपनी नामक व्यवसायिक संस्था के रूप में रखा। इस कंपनी के अधिकांश कर्मचारियों का वेतन बहुत ही कम था और स्थानीय शिक्षा के प्रति इनकी कोई रुचि नहीं थी। अंग्रेजी व्यापारिक हितों की रक्षा के लिए इस कंपनी ने अंग्रेजी साम्राज्य की अधीनस्थ सेवा का रूप ले लिया। इस नए कर्तव्य के निर्वाह के लिए कंपनी ने भारतीय समाज के कुछ ऐसे महत्वपूर्ण लोक समूहों को कंपनी के कार्यों में सम्मिलित करना पड़ा जो भारत में ब्रिटिश उपनिवेश को स्थापित करने में सहायता कर सकते थे। इन उपनिवेशकों ने एक नई व्यवस्था को सृजन के लिए तथा विश्वसनीय मूल निवासियों का एक वर्ग स्थापित करने के लिए एक शिक्षा प्रणाली लागू की। इस शिक्षा प्रणाली के उद्देश्य इसका विस्तार करना तथा स्थानीय समुदायों की सहायता से अपने लाभ कमाने को सुगम बनाना था और पाश्चात्य विज्ञान के प्रकाश के माध्यम से भारत की अज्ञानता को

Notes

दूर करना ताकि भारतीय तर्क आधारित जीवन जी सके तथा अपनी भावनाओं को काव्य में रख सकें।

शिक्षा के प्रयोजन की दृष्टि से उस समय अंग्रेज अधिकारी तीन स्तरों पर कार्य करते थे। एक ओर प्राच्यविदों के अनुसार भारतीय संस्कृति से काफी कुछ प्राप्त किया जा सकता है, अतः शिक्षा और ज्ञान की देशज प्रणाली के प्रोत्साहन का समर्थन किया। दूसरी ओर मिशनरियों के विचार में भारतीय संस्कृति तथा रीतियाँ असभ्य तथा पुरानी है और अतः भारतीयों में पाश्चात्य शिक्षा को प्रोत्साहन के द्वारा सुधार लाने तथा उन्हें ईसाई धर्म अपनाने की आवश्यकता पर बल दिया। उपयोगितावादियों ने पाश्चात्य विज्ञान की पढ़ाई का समर्थन किया क्योंकि इससे भारतीय समाज का विवेकपूर्ण या तर्कणापरक विकास सुनिश्चित हो सकता था तथा इससे भारत के भौतिक विकास की वृद्धि होगी। इन तीनों स्थितियों की अभिव्यक्ति कुछ सीमा तक 1835 के लार्ड मैकाले के शिक्षा के अभिलेख में देखी जा सकती है।

शीघ्र ही उच्च शिक्षा के लिए माँग इतनी तीव्र हो गई कि सन् 1854 में भारत की ओर से ईस्ट इंडिया कंपनी के कोर्ट ऑफ डायरेक्टर्स को एक टिप्पणी भेजी गई, जिसमें समग्र रूप से शिक्षा के सन्दर्भ में अनुशंसाओं के अतिरिक्त

Notes

भारत में विश्वविद्यालय स्थापित करने का प्रस्ताव भी सम्मिलित था। इसके आधार पर एक अन्य महत्वपूर्ण दस्तावेज - सन 1854 का शिक्षा डिस्पैच अथवा वुड्स डिस्पैच कहा जाता है। यह डिस्पैच कंपनी ने भारत के गवर्नर जनरल डलहौजी को भेजा। चार्ल्स वुड ने 100 अनुच्छेदों का एक दिशा निर्देश भेजा जिसमें शिक्षा के विभिन्न पक्षों से संबंधित अनुशंसाएँ सम्मिलित थी। इस डिस्पैच के प्रारंभिक अनुच्छेद से लिया गया एक उदाहरण इस महत्वपूर्ण दस्तावेज के स्वरुप को बताता है। विश्वविद्यालयी शिक्षा के संदर्भ में इस डिस्पैच में बहुमूल्य सुझाव दिए है। इससे व्यावसायिक शिक्षा के महत्व पर बल दिया गया है, और ऐसी अध्यापक प्रशिक्षण संस्थाओं की अनुशंसाएँ की गई है, जैसे इंग्लैण्ड में पाए जाते है।

ब्रिटिश नीति के उद्देश्य :- मैकाले के कार्यवृत्त तथा वुड्स डिस्पैच सामान्यत: ब्रिटिश नीति के उद्देश्यों की अभिव्यक्ति करते है। जैसे -

- व्यक्तियों के एक ऐसे वर्ग का निर्माण करना जो रक्त और रंग में तो भारतीय है, परन्तु उनकी रुचियाँ, उनके विचार, नैतिकता तथा बुद्धि अंग्रेजो जैसी हो।

Notes

- भारत में साम्राज्य के कार्य संपादन के लिए विश्वसनीय कार्यकर्ता / सेवक प्रदान करना।
- ब्रिटिश सामान के लिए भारत में एक बाजार तैयार करना तथा उन वस्तुओं की आपूर्ति करना जिनकी आवश्यकता अंग्रेजों को है।

इन उद्देश्यों के साथ अंग्रेज उन मध्यम-वर्गीय भारतीयों का एक वर्ग निर्मित करने में सफल हुए जिन्होंने देश के प्रशासन को चलाने में उनकी सहायता की। समाज के उच्च वर्ग ही ऐसे थे जिनकी पहुँच शिक्षा प्रणाली तक थी और जो अंग्रेजी आदर्शों में दीक्षित हुए। प्रणाली ने लिपिक तथा प्रशासक भी पैदा किए तथा इनके फलस्वरूप ऐसे व्यक्तियों का निर्माण भी हुआ जिन्होंने अंग्रेजी शासन का विरोध किया और इसके पश्चात अंग्रेजों को भारत से भगाने में राष्ट्रीय आंदोलन में सक्रिय भागीदारी की।

शिक्षा पर राष्ट्रवादी विचार : गांधी, टैगोर एवं अन्य विचारकों के

शैक्षिक विचारों पर विस्तार से चर्चा करने पर यह पता चलता है कि भारतीय विचारकों के शैक्षिक विचारों और अंग्रेजों द्वारा प्रतिपादित विचारों में कोई अंतर ~~अवश्य~~ है। शिक्षा की भूमिका के सन्दर्भ में राष्ट्रवादी तथा औपनिवेशिक विचारों में काफी समानताएँ थी जिसका श्रेय इन नेताओं की सामाजिक

Notes

पृष्ठभूमि को दिया जा सकता है, जिनमें अधिकांश उच्च वर्गीय ब्राह्मण परिवार से संबंधित है। 19वीं शताब्दी के भारतीय बुद्धिजीवियों के शैक्षिक विचार औपनिवेशिक शासकों की नीति से निम्नलिखित तीन आधारों पर भिन्न थे :-

- प्रथम विज्ञान शिक्षा पर बल की दृष्टि से
- द्वितीय जन शिक्षा की आवश्यकता की अनुभूति की दृष्टि से
- तृतीय, देशी भाषाओं में शिक्षा के समर्थन की दृष्टि से।

राष्ट्रीय आंदोलन का संबंध मात्र अंग्रेजी शासन से स्वतंत्रता प्राप्त करना ही नहीं था, अपितु इसका संबंध राष्ट्रीय संस्कृति और मुख्यतः विज्ञान और प्रौद्योगिकी की शिक्षा तथा बौद्धिक सृजनात्मकता का विकास करने से भी था।

शिक्षा की विषयवस्तु :- शिक्षा की विषयवस्तु के मामले में औपनिवेशिक शासन की विरासत पर भी ध्यान देने की आवश्यकता है। इस सन्दर्भ में दो प्रकरण सामने आए -

a) देशीपन b) संगतता या औचित्य

संस्थागत अनुशासन तथा अधिगम प्रक्रियाओं की विधियों में चापलूसी तथा अकर्मण्यता की परंपरा के उभार पर विपरीत प्रकार से ध्यान

Notes

देने की आवश्यकता है। बहुत अधिक संख्या में आज भी कमजोर संस्थाएँ यांत्रिक और असृजनात्मक विषयवस्तु की पढ़ाई जारी रखे रहे हैं। स्वतंत्रता पूर्व काल के साथ निरंतर वर्तमान स्थिति के लक्षणों की व्याख्या करेंगी जो इस स्थिति में न तो पाठ्यचर्याओं में और न ही उन विद्यार्थियों के नामांकन में जो समाज के कमजोर वर्गों में आते हैं, स्वतंत्रता के पश्चात कोई आमूल परिवर्तन आया है।

सारांश :- प्रस्तुत पाठ में हम शिक्षा उपनिवेशकों के हितों को पूरा करती है, उपनिवेशितों के हितों को नहीं। शासक ही हैं जो उपनिवेशक शैक्षिक निर्णय लेते हैं कि किसे शिक्षा दी जाए, क्या सिखाया जाए, किस भाषा में सिखाया जाए, किस माध्यम से सिखाया जाए जाए कि वह उपयोगी हो। भारतीय स्थिति में अपना साम्राज्य स्थापित करने की प्रक्रिया में उपनिवेशकों ने हमारी विरासत के नकारात्मक लक्षणों से निष्कर्ष निकाले और गुणों की अवहेलना कर दी। इस प्रवृति को कुछ अन्य कारकों की वजह से भी बल मिला, जैसे विदेशी भाषा का प्रयोग, विदेशी संस्कृति तथा समाज के विषय में अधिकाधिक बताना तथा एक समान बाह्य परीक्षाओं का दमघोंटू

Notes

प्रभाव। स्वतंत्रता के पश्चात् राष्ट्रीय आन्दोलन की सकरात्मक आकांक्षाओं को स्पष्ट करने की दिशा में प्रयास किए गए। परन्तु पुरानी स्थापित संस्थाओं और व्यवहार प्रतिरूपों से अपने आपको अलग कर पाने में काफी कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। इस विरासत के बहुत सारे नकारात्मक तत्वों को भी बल मिला है, जिससे हमारी आकांक्षाएं केवल आकांक्षाएं ही रह गई, साकार नहीं हो पाई।